॥ हरिस्तोत्रम् ॥

.. hari stotram ..

sanskritdocuments.org

July 25, 2016

Document Information

Text title : hari stotra
File name : haristotra.itx
Location : doc_vishhnu
Author : Swami Brahmananda
Language : Sanskrit
Subject : philosophy/hinduism/religion
Transliterated by : DPD
Proofread by : DPD
Latest update : October 28, 2009, September 17, 2013
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
Site access : http://sanskritdocuments.org

॥ हरिस्तोत्रम् ॥

जगज्जालपालं चलत्कण्ठमालं var कचत्कण्ठमालं
शरच्चन्द्रभालं महादैत्यकालम् ।
नभोनीलकायं दुरावारमायं
सुपद्मासहायं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ १॥

सदाम्भोधिवासं गलत्पुष्पहासं
जगत्सन्निवासं शतादित्यभासम् ।
गदाचक्रशस्त्रं लसत्पीतवस्त्रं
हसच्चारुवक्त्रं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ २॥

रमाकण्ठहारं श्रुतिव्रातसारं
जलान्तर्विहारं धराभारहारम् ।
चिदानन्दरूपं मनोज्ञस्वरूपं
धृतानेकरूपं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ३॥

जराजन्महीनं परानन्दपीनं
समाधानलीनं सदैवानवीनम् ।
जगज्जन्महेतुं सुरानीककेतुं
त्रिलोकैकसेतुं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ४॥

कृताम्नायगानं खगाधीशयानं
विमुक्तेर्निदानं हरारातिमानम् ।
स्वभक्तानुकूलं जगद्वृक्षमूलं
निरस्तार्तशूलं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ५॥

समस्तामरेशं द्विरेफाभकेशं
जगद्बिम्बलेशं हृदाकाशदेशम् ।
सदा दिव्यदेहं विमुक्ताखिलेहं
सुवैकुण्ठगेहं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ६॥

सुरालिबलिष्ठं त्रिलोकीवरिष्ठं
गुरूणां गरिष्ठं स्वरूपैकनिष्ठम् ।
सदा युद्धधीरं महावीरवीरं
महाम्भोधितीरं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ७॥

रमावामभागं तलानग्रनागं
कृताधीनयागं गतारागरागम् ।
मुनीन्द्रैः सुगीतं सुरैः सम्परीतं

गुणौघैरतीतं भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ८॥

फलश्रुति ॥

इदं यस्तु नित्यं समाधाय चित्तं
पठेदष्टकं कण्ठहारं मुरारेः ।
स विष्णोर्विशोकं ध्रुवं याति लोकं
जराजन्मशोकं पुनर्विन्दते नो ॥ ९॥

इति श्रीमत्परमहंसस्वामिब्रह्मानन्दविरचितं
श्रीहरिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by DPD

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

.. hari stotram ..
was typeset on July 25, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*